साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 36, मई(प्रथम), 2018

पिंजरा

तुलसी तिवारी

माघ की ठंठी रात थी, दो दिनों से झड़ी लगीं थी, जिसके कारण मौसम और ठंडा हो गया था। कोई तो ऐसा पहलवान होता, जो चार बजे सुबह गंगा के तट पर किसी भी कारण से आता। पूरा तट सून-सान पड़ा था, तटीय भूमि पर सरसो के पौधे स्तब्ध खड़े थे, जो दिन में पीत पुप्पो से अच्छादित होते, वे इस समय ब्रम्ह मुर्हुत की चाॅंदनी में शांत खड़े थे। बेला अपने 3 साल के बेते मानू को कंधे से चिपकाये पूरानी कथरी से ढ़के तेजी से रास्ता पार कर रही थी। उसे किसी का भय नहीं था, तेज चलने से अकड़े जोड़ कुछ खुले लेकिन बरफ सी ठंढ हाथ पैर जमाने की होड़ में थी।

बेला अपनी धुन में गंगा जी के तट की ओर बढ़ रही थी, उसके एक हाथ में एक झोला था, जिसमें उसके और बच्चे के कुछ कपड़े थे। उसे विश्वास था एक तो कोई मिलेगा नहीं और अगर मिल गया तो सोचोगा माघ के महिने में गंगा नहाने जा रही है। छोटे घुंघट से उसका माथा ढका था वह एक मध्यम ऊँचाई की युवती थी।.....चाॅंद देख रहा था कि उसकी आॅंखें बहुत रोने के कारण सूजी हुई थीं, शरीर पर मलिन वस्त्र थे। ढ़ंग का ओढ़ने का न बच्चे को ओढ़ाने का, गंगा के तट पर पहंॅुच कर उसने एक हाथ से जल का स्पर्श किया, हे गंगा माॅं! ‘‘मुझे माफ करना, जीवन बचाने का कोई रास्ता नहीं था मेरे पास, बच्चे के भविष्य के लिए मुझे यह कदम उठाना पड़ा’’।

‘‘सुरेमनपुर गाॅंव कें भूतपूर्व जमींदार की 6वीं बहू थी बेला, आज से छःबरस पूर्व एक दुर्घटना की तरह इस गांव में आई थी। सुबेदार सिंह के बेटे थे रईसी में पले बढ़े, अतः उच्चकुल में जन्म लेने के सिवा कोई मानवीय विशेषता हासिल न कर सके। पाॅंच भाई तो बड़े-बड़े शहरो में जाकर कुछ कमाने खाने लगे। लेकिन 6वें की कथा ही निराली थी, नाटे कद का काला कलूटा गुलाब सिंह, चेहरे पर माता के दाग, विभिन्न शरारतों के दौरान एक आॅंख एक हाथ गवां चुका था। हाथ कुहनी से जुड़ा अवश्य था किन्तु किसी काम का नहीं था। स्कूल में 5वीं से आगे न पढ़ पाया। मास्टरों को जो छकाया कि उनके बड़े-बड़े कभी मास्टर बनने का नाम न लें। सुर्ती, सुपाड़ी, गांजा, भांग आदि के निर्वाध सेवन के कारण छोटे-छोटे दाॅंत एकदम रच कर अनार के सड़े दाने

जैसे हो गये थे, शौकिन जरा दूसरी तरह का था, गले में रूद्राक्ष की लंबी माला, लाल गुरिया की माला, कौड़ी की माला, हमेशा लादे रहता, बाल बड़े-बड़े रूखे, शरीर पर कभी लूंगी बनियान के ऊपर पूराना कंबल झुला लेता। कभी पिता जी का ओव्हर कोट डाल लेता। बच्चे रात को उसकी चमकती हुई आॅंख और विकट वेष से डरकर भाग जाते। दिन में अटारी की सीढ़ी पर चढ़कर अन्दर से चिढ़ाते औघड़ बाबा -औघड़ बाबा, कुछ दिनो बाद वह अपने साथ बड़ा सा लोहे का चिमटा भी रखने लगा। 22-25 का होते होते गाॅंव तो गाॅंव घर वालों का रहना हराम कर दिया औघड़ ने, देर रात शराब पी कर घर पहुॅंचता, पाॅंचों भौजाईयों को भद्दी-भद्दी गालियाॅं देता, हाथ पकड़ कर खींचता, कोई कुछ कहता तो मार पीट करता। साफ कहता मेरे भाई मेरा हिस्सा खाना चाहते हैं। इसलिए मेरी शादी नहीं करते। अब उसे कौन समझाऐ की बाप की सारी ठकुरैती भी तुझे दूल्हा बनाने में असमर्थ हैं। आजादी का जमाना है ऐसे लड़के केा कौन दामाद बनायेगा। कोई समझाता कि जरा आदमी जैसे रहो तो दो चार दिन नहाता धोता, फिर वही ढर्रा।

बड़े भाई लाल सिंह ने सभी भाइयों से सलाह कर समस्या का हल करने के इरादे से दो बीघा खेत बेच कर औघड़ की शादी करने का फैसला किया।, अब देश जवार मे तो सब जानते ही थे। दूर-दराज कहीं से न हो तो कन्या मूल्य चुका कर ही सही चाहे जिस जाति की कन्या मिले, औघड़वा की शादी करने के सिवा कोई चारा नहीं।

एक दिन पास बैठा कर बड़की भौजी ने समझाया ''इ औघड़ का बाना उतार देव लाला, आज कल की लड़की बिटियाॅं चमकदमक चाहती है। बाल छोट कराई लेव जमाने के हिसाब से कपड़ा पहिरौ, नहाओ धोवो! के से कम हो?''(ये औघड़ का बाना उतार दो लाला आज कल की लड़कियाँ चमक-दमक चाहतीं हैं नहाओ धोओ जमाने के हिसाब से कपड़े पहनो ! किससे कम हो भला?) बड़ा असर पड़ा औघड़ पर, बाल छट गये लाल सिंह के लाये शर्ट, फुलपेन्ट, चश्मा, टोपी लगा कर औघड़ सचमुच बदल गया उस दिन, लेकिन रात ने जैसे पलट कर रख दिया सब कुछ ।

लाल सिंह किसी ऐसे दलाल की खोज में लग गया जो दूर दराज से किसी जरूरतमंद की लड़की को फांस कर औघड़ की दुल्हन बनवा दे।

पाॅंचवे नम्बर के भाई की ससुराल छत्तीगढ़ के पेन्ड्रा शहर में थी, भाई बहू वहीं गई थी, पुत्र होने का संदेशा लेकर एक नाई आया था। उसका वेष पंडित का था और वह शादी ब्याह लगाने में माहिर था।

''यदि कोई जुगाड़ हो तो बताना पंडित'', लाल सिंह ने नाई को बुलाकर कहा था।

' ठाकुर साहब शादी तो हम अच्छी से अच्छी करा देंगे, दूल्हा कौन वही.....?''

'' हाॅं वहीं औघड़! दिखता ही ऐसा हैं न कि लड़की वाले बिदक जाते हैं।'' लाल सिंह ने बात पूरी की।

''कोई बात नहीं मालिक! बिआह तो ठाकुर खानदान के कुकुरऊ के होई जाई, हमार बात मानत जाव तव'' वह चतुराई से मुस्कराया।(शादी तो ठाकुर खानदान के कुत्ते की भी हो जाय) लाल सिंह को बड़ी आस बंधी उसकी बात सुन कर।

'' बोलो पंडित हम आप की क्या बात माने?''

'' सुनो हुजूर! रूपिया लागी दस हजार, पाॅंच पहिले पाॅंच काम होये के बाद।''(सुनो हूजूर दस हजार रूपये लगेंगे पाँच शादी के पहले और पाँच बाद में)

लाल सिंह इस ओर से तो तैयार ही था।

'' हाॅं मान लिए, अब कहो!''-

''दूसर लड़का से हुॅंआ शादी होई; हियां आई के असल बर से फिर कई दीन जाई'(वहाँ दूसरे लड़के से शादी होगी, यहाँ आकर फिर असली सेे कर दी जायेगी।)

'' अरे पंडित! मरवाओगे क्या? ऐसा कैसे होगा? लाल सिंह उसकी बात सुन कर हड़बडा गया।

'' फिर तो मुश्किल है हुजूर!''

'' अब ऐसा कौन मिले की, नकली वर बने ई सार औघड़ भाई न होई दुश्मन है, का का करवाई सार '' लाल सिंह कुछ सोचने लगे।(ये साला औघड़ भाई नहीं दुश्मन है न जाने क्या-क्या करवायेगा अभी।)

सुबेदार सिंह के छोटे भाई का लड़का बूटा सिंह 20 साल का नौजवान था, किसी तरह पिछले साल उसकी शादी निपटाये थे; उसी पर आस टिक गई, वह इन्कार नहीं करेगा। नाई तो दूसरे दिन पाॅंच हजार एडवांस और संदेश देने के बदले घोती कुरते का नेग sलेकर चला गया। इधर बूटा सिंह रोते गाते बन ही गया बली का बकरा 15 दिन बाद नाई ने तार भेजा। ''ठाकुर साहब आई जाव नs! जरा ठाठ बाट से आयो। बेजोड़ रिश्ता हैं''; (ठाकुर साहेब , जरा ठाट-बाट से आना रिश्ता बड़ा बेमेल है।ताम-झाम देख का कुछ बोल नहीं पायेंगे।) आधा डर आधा बल कर के लाल सिंह 10 आदमी की बारात और दो दुल्हे लेकर पेेन्ड्रा पहुॅंचे । एक अच्छे होटल में रुके। बूटा परेशान था मौका पाकर रो लेता था वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। सुनेगी तो न जाने क्या कर बैठेगी, यही डर खाये जा रहा था उसे।

औघड़ नाम का औघड़ रह गया था! चेन वाला डिस्को जूता, काला चश्मा, बालों में खुशबूदार तेल और सब पर गजब शर्ट की बाईं जेब में खुसे दो दो पेन। लाल सिंह खुद उसे तैयार करा कर लड़की के घर ले गया, बार-बार समझाता रहा 'कुछ बोलना मत गंवार! चुपचाप जैसा इशारा करूॅ करते जाना। वह बूटा सिंह की बगल में बैठा था। जब नाश्ते की ट्रे लिए कन्या कमरे में आई, तो औघड़ आॅंखे फाड़ फाड़ कर देखने लगा, लाल सिंह ने आॅंखों से जैसे घुॅंसा मार कर होश दिलाया। अठारह वर्षीय बेला मैट्रिक

पास नये जमाने की लड़की थी, लेकिन जाकर मरना वहाॅं था उसे जहाॅं पानी न मिले। रंग रूप में लड़की ना पसन्द होने का सवाल ही नहीं था।

बेला अपनी पाॅंच बहनों में सबसे छोटी थी, पुरखे अच्छी जमीन जायद्ाद छोड़ कर गये थे, किन्तु बाप की जूए शराब की आदत के कारण परिवार तबाह हो चुका था, चार उम्रदराज बहने बदनामी के कई किस्से लिए कुंआरी बैठी थीं। नाई का घर में आना जाना था।

''सुरेमनपुर के ठाकुर खानदान का ऐसा वर्णन किया कि सभी मान गये उन्हें। जैसे पाॅंच भाई दिल्ली में कमा रहे हैं', खेती-बाड़ी, बाग-बगीच, पंप टे°क्टर कुछ पूंछो मत। हमार मन है कि एक लड़की का शादी वोह घर में कर देव ठाकुर साहब'', नाई बेला के पिता पर जादू चला रहा था--(हमारा मन है कि एक लड़की की शादी उस घर में कर दें ठाकुर साहब।)

''खर्चा वर्चा बहुत लगेगा भाई! हमारी हालत तो जानते हो'',--

'' अरे कुछ नहीं! कहौ तो दोनो ओर का खर्चा उनहीं से देवा दें, उन्हें क्या कमी हैं''?

'' कोई गड़बड़ी तो नहीं होगी ?'' बेला के पिता ने पूछा था।

'' नहीं भाई! का हमका पेन्ड्रा छोड़ के भागै का है''?(नहीं भाई! क्या हमको पेन्ड्रा छोड़ कर भागना है?)

'' बड़ी लड़कियों ने तो इस प्रकार शादी से साफ इन्कार कर दिया। फंस गई बेचारी अभागी बेला! उसे लगा कि जिल्लत की जिन्दगी से अच्छा इस अवसर का लाभ उठाना है। जो सुख दुख होगा, देखा जायेगा। यहीं कौन सी खुशी है उसे। आज उम्र है, शरीर अच्छा है, कहीं ठिकाना लग जायेगा, भविष्य क्या बहनों से अलग होगा? उसने हिम्मत की।

'' बापू मेरी शादी कर दो वहांॅ। बेला ने साफ कह दिया था। मंदिर में शादी हुई, औघड़ एक बगल बैठा था। वरमाला बूटा के गले में पड़ी। शादी के मंत्रो के बदले वह भगवान् से क्षमा मांगता रहा - हे भगवान् मेरी कोई गलती नहीं। ललवा ने फंसाया है।''- बेला तो घ्ंाूघठ की ओट से ज्यादा कुछ समझ नहीं पाई। वर के पास बैठे अटपटे साज सज्जा वाले युवक को भी उसने झुकी-झुकी निगाहों से देखा। वह शंख, घड़ियाल, पंडित के आशीर्वचनों के मध्य कन्या से बधू बन गई। पच्चास साठ लोगो को भोजन करवाया गया, जाहिर है कि पूरा खर्च लाल सिंह ने किया।

इधर शादी हुई, भोज हुआ, और बारात बिदा हो गई। एक बजे सारनाथ एक्सप्रेस में बैठ कर दुल्हन सहित बारात इलाहाबाद को चल पड़ी।

बेला थकी हुई थी, थोड़ी ही देर बाद उसे नींद आ गई। जब सबेरा होने पर उठ कर बैठी तो उसकी साथ वाली सीट पर मौर माल पहने कोई दूसरा वर बैठा था। बूटा को किसी स्टेशन पर उतार दिया गया था। अब औघड़ दुल्हा था। बेला कुछ समझ नहीं पाई, पूछे तो किससे। धोखे की आशंका से उसका जी घबड़ाने लगा। कोई तो पहचान का भी नहीं था।

‘‘ वो कहाॅं गये, उसने हिम्मत करके दुल्हा से पूछा-

उŸार अगली सीट पर बैठे लाल सिंह ने दिया- ’’बतायेंगे बतायेंगे’’- सब ताश खेलने में मशगुल हो गये।

इलाहाबाद स्टेशन से सुरेमनपुर 50 कि.मी. होगा जीप से वे लोग गाॅंव गये। सारा लोकाचार, मंगल गान औघड़ के साथ ही हुआ। हो हल्ले में बेला का प्रश्न न किसी ने सुना, न समझा ,न उŸार दिया। घर पुराने जमाने का बना हवेली नुमा था। पक्की ईंटो पर पलस्तर हुआ था। शादी के लिए लगता था घर की पोताई करवाई गई थी। लोक गीत गाती औंरतें उसे एक साफ सुथरे किन्तु बन्द कमरे में पहुॅंचा गईं। वहाॅं खाट पर दरी चादर बिछा था। दोपहर का समय होने के कारण दरवाजा बंद होने पर भी रोशन दान से कुछ उजाला आ रहा था। बेला पिंजरे में फंसी मैना जैसे छटपटाने लगी। उसे कोई अज्ञात भय सा अनुभव हो रहा था जैसे कोई बड़ा अमंगल होने वाला है।

5 जवान और एक बूढ़ी औरत मिलकर उसे कमरे में बन्द कर गईं थीं। बाद में बेला ने जाना की वे उसकी जेठानियाॅं और सास थी। बाहर सब का खाना पीना चलता रहा। उसकी बड़ी जेठानी एक चाॅंदी की प्लेट में खीर लेकर आई थी, पीछे छोटी जेठानी दो थाली में खाना लेकर आई थी।

‘‘आओ खाते है ’’ भूख तो बेला को लगी ही थी, किन्तु वह अपनी ओर से ससुराल में कोई गलती नहीं करना चहती थी।

‘‘पहले खीर खाना छोटी हमारे घर का रीवाज है।’’ बड़ी जेठानी एक थाली उसे देकर एक खुद ले कर दिवाल से टिक कर खाने लगी। मेवे से भरी खीर बेला को कुछ दूसरे प्रकार की लगी। भोजन करने के बाद जब जेठानी जाने लगी तो बेला ने हिम्मत करके पूछना चाहा- ‘‘दीदी जिससे शादी हुई, वे कहाॅं गये, ये दूसरा कौन मेरे साथ था?’’ उसके सुन्दर मुखड़े पर उलझन थी।’’ अभी बहुत लोगो को खाना खिलाना है फुरसत से बात करेंगे।’’ कहती हुई वह बाहर चली गई। दरवाजा बाहर से बंद करती गई। वह उंघने लगी, फिर ऐसी नींद आई जिसने प्रलय ढा दिया।

बेला की नींद चार बजे से जो लगी तो चार बजे सुबह जाकर खुली थी। नींद थी या बेहोशी, भगवान्े जाने, कपड़े लत्ते सब बिखरे थे, बाल खुले थे, शरीर में टूटन हो रही थी,

उसने लालटेन के नीम उजाले में देखा ; उसकी खाट पर वहीं व्यक्ति बेसुध सोया था। जो शादी के सामय वर की बगल में बैठा था, और ट्रेन में उसके पास बैठ गया था।
एक झटके से सब कुछ बेला की समझ में आ गया। अब उसके पास ऐसा क्या बचा था जिसे लेकर वह सिर उठाकर जी सके।
'' कौन हैं? तू कौन है? उठ! उठ!'' उसने हाथों से लातों से औघड़ की जी भर के पिटाई की। बेकाबू होकर कमरे का सामान फंेकने लगी।
'' मैं तुम्हारे पुरखों तक को बंधवा दँूगीं, क्या समझ कर ऐसा धोखा दिया?'' उसने और दो हाथ जमाया- लगता था बाहर कुछ लोग किसी ऐसी ही घटना की प्रतीक्षा में जाग रहे थे। दरवाजा खुला और औघड़ आॅंखे मलता चोट सहलाता चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।'' घर के सभी लोग कमरे में घुस आये।
''क्या हुआ दुल्हिन''-
'' धोखेबाजों, वह कहाॅं गया जिससे मेरी शादी हुई ? यह किसे सुला दिया था मेरे पास? सभी की खटिया खड़ी करूॅंगी! मुझे क्या समझ रखा है? बेला के मुॅंह से झाग निकल रहा था; मणि खोई नागिन जैसी वह व्याकुल थी।
'' सभी लोग रोने कलपने लगे! बिटियाॅं। अब हमार इज्जत और जिन्दगी तुम्हरे हाथ है, मारौ चाहे छोड़ौ, यही तुम्हार पति है।'' सास हाथ जोड़ कर बोली थी।
'' इस औघड़ का घर बसाने के लिए सब पाप करना पड़ा बेटा। हमें माफ कर दे। तुझे रानी की तरह रखेंगे। बराबर हिस्सा दंेगे। सभी भाई तेरे लिए पैसा भेजेंगे इसे अपना पति स्वीकार कर ले।''लाल सिंह हाथ जोड़े रो रहा था।
''उसे बुलाओ तो जो मेरा दुल्हा बना था, जरा दो चप्पल लगा लू,'' बेला गुस्से से पागल हो रही थी।'' वह तो रास्ते से ही दिल्ली चला गया। तुम शांत हो जाओ तो वह भी आकर माफी मांग लेगा, वह तुम्हारा छोटा देवर है बिटिया।'' ससुर ने समझाया।
'' सभी यहाॅं से हट जाओं । मैं जीना नहीं चाहती!'' बेला जार-जार रो रही थी।
सभी बाहर चले गये। दारवाजा बाहर से बंद करते गये। वहाॅं से भागी तो यहाॅं ये हाल। अगर मैके खबर भेजे तो बदनामी के सिवा क्या मिलेगा, कौन ऐसा सहारा है जिसके बल पर लड़े; लेकिन पति यह औघड़?- एक घृष्णा का भाव भर जाता मन में। मजबूर हो कर बेला को औघड़ को अपना पति स्वीकार करना पड़ा। आॅंगन में ही फिर से औघड़ और बेला का विवाह हुआ। सभी भाई अपने परिवार के साथ अपने-अपने काम पर चले गये। खेती बाड़ी औघड़ के भरोसे छोड़ कर, आजादी और दुल्हन दोनो पाकर औघड़ और उन्मŸा हो गया, चार संगी और बन गये ठाकुर साहब के।. दिन रात शराब,गांजा चलने लगा । वह देर रात घर आता, अगर बेला कुछ कहती तो अच्छी खातिर करता, सास डाॅंटती थी, कई बार औघड़ को मार बैठती थी बेला के लिए। ध्यान न देने

से खड़ी फसल कोई चुरा लेता, खेत बोये न जाते, दाना होता नही तो खायें क्या? सारे खेत धड़ाधड़ औघड़ रेहन रखता गया। भाइयों ने कुछ दिन कपड़ा-लत्ता, रूपया-पैसा भेजा, फिर बंद कर दिया।

''इतनी बड़ी जायदाद में चार का पेट नहीं चला सकते तो हम क्या करें?''समय पाकर बेला ने एक बच्चे को जन्म दिया। सास के कारण ही जीवित बची वर्ना किस्सा खत्म था बेला का।

जैसे तैसे नारकीय जीवन जीते-जीते बेला की सास भी चल बसी। अब तो औघड़ के गण घर पर ही डेरा डाले रहते। उस पर औघड़ को कभी विश्वास नहीं रहा। उसे पक्का मालुम था कि बेला उसे पति नहीं मानती, अवश्य इसका कोई चक्कर हैं। है नही ंतो हो जायेगा। वह बेहद शक्की था झगड़े और पिटाई का यह भी एक कारण था।

तब तो बेला की जिन्दगी बेशर्मी की सारी सीमाएॅं लाॅंघ गई। जब छः माह पहले किसी अहीर की लड़की से कुछ बदतमीजी कर बैठा। पहले तो अहीरो ने मिल कर खूब जूतमपैजा़र की, उसके बाद पुलिस में दे दिया। उसकी जमानत के लिए लाल सिंह दिल्ली से आये, मुकदमें में औघड़ को सजा से तो बचा लिए। लेकिन पाॅंचों भाइयों ने मिलकर इतना मारा की एक जान भर बची रही।

'' किस तरह से तेरे लिए इतनी अच्छी बीबी लाये, और तू है कि उसके रहते इधर-उधर मुॅंह मारता है?'' लाल सिंह ने खूब खातिर की औघड़ की।

इसी बीच एक दिन बूटा बड़े दिनों के बाद गाॅंव आया। औघड़ खेतों की ओर गया था बेला घर में अकेली थी।

बूटा की सूरत वह आज तक नहीं भूल पाई थीं। उसके कुछ कहने के पहले ही बूटा ने बेला के चरण छुए। '' तुम्हारा अपराधी हँू भाभी! क्षमा करो!'' उसकी आॅंखें झुकी थीं। '' तुम्हारी सारी खबर मुझे है। भाई का घर बसाने के लिए हमने तुम्हारा जीवन तवाह कर दिया। भगवान् भी हमें माफ नहीं करेगा।'' उसकी आॅंखों में पछतावे के आॅंसू थे।

'' अब छोड़ो उस बात को! जो होना था सो हुआ। सब की अपनी-अपनी मजबूरियाॅं हैं।'' बेला ने अपने कमरे में ले जाकर बूटा को खाट पर बैठाया, उसके परिवार का हाल चाल पूछा। जलपान कराया। भाई से तो हम हार गये हैं भाभी यदि तुम हिम्मत करो तो कुछ करंे, बच्चे का भविष्य भी देखना हैं। बूटा ने उसकी कमजोर रग पर हाथ रख दिया था। बड़ी देर से रोके आॅंसू उसका आॅंचल भिगानें लगे।

'' एक बार साहस तो की थी, उसी का फल पा रहीं हूॅं''? उसने लंबी साॅंस छोड़ते हुए कहा।

‘‘ तुम मेरे साथ चलो। गाजियाबाद पहुॅंच कर तुम जैसा कहोगी, इंतजाम कर दिया जायेगा। यहाॅं तो कुछ नहीं कर सकता, भैया को तो जानती ही हो? उसने धीमें स्वर में समझाया। बेला ने बहुत धोखा खाया था जीवन में। किसी धोखे की आशंका से उसका दिल धड़क उठा। कुछ देर बाद हिम्मत करके उसने अपनी बात कही-

‘‘अगर बिना किसी नये रिश्ते के तुम मेरी मदद कर सको तो मैं यहाॅं से निकलना चाहुॅंगी, यदि हाथ में गंगाजल लेकर कहो कि निःस्वार्थ भाव से मेरी मद्द करना चाहते हो तो ठीक, वरना यह सफर यूॅं ही चलने दो।’’ उसकी आवाज में दृढ़ता थीं।

‘‘क्यों न कहो? मैंने तुम्हारे साथ व्यवहार ही ऐसा किया है! मैं भाभी और भतीजे को अपने साथ ले जा रहा हूॅं किसी गैर को नहीं, रिश्ते को जब इतने दिन दूर रह कर नहीं भूल सका तो पास रह कर कैसे भुला पाऊँगा ? हाॅं यह कह सकता हूॅं कि तुम्हारी मर्जी के खिलाफ हमारे बीच कोई नया रिश्ता कायम नहीं होगा। गंगा जल क्या पूरी गंगा में खड़े करा कर बचन ले लो।’’ बूटा की आॅंखों में दृढ़ता के भाव देख बेला कुछ आश्वस्त हुई।

‘‘ मैं स्वतंत्र रूप से कुछ काम कर अपना और अपने बच्चे का जीवन चलाना चाहती हूॅं घर परिवार का सुख इतना ही था तकदीर में। तुम्हीं बाॅंधे थे यदि छुड़ा दो तो माफ कर दूॅंगी तुम्हें।’’ बेला ने सब कुछ सोच समझ कर बूटा से दो टूक बात की।

‘‘ठीक है, यदि मुझ पर विश्वास हो तो कल सुबह पाॅंच बजे गंगातट पर आ जाना, मैं नाव लेकर आऊँगा। नाव के रास्ते हम लोग कम समय में यहाॅं से दूर निकल जायेंगे। फिर ट्रेन से गाजियाबाद , वहाॅं अपनी जान पहचान है घर है, काम है!

बेला बीच में ही बोल पड़ी- ’’और परिवार ? वे लोग तुरन्त यहांॅ खबर कर देंगे और हम दोनो ही-

‘‘अरे नहीं भाभी, पत्नी तो झूठी दूसरी शादी को सच होने के गम में घुल-घुल कर मर गई! एक लड़की है अभी छोटी हैं हम दोनो मिलकर इन दोनो बच्चों को नया जीवन देगे’’-

‘‘ ओह्! तुम्हारे साथ भी बड़ा बुरा हुआ।’’-

‘‘ यह एकदम ठीक ही हुआ। जैसे को तैसा।’’-

‘‘ मैंने ऐसा तो कभी नहीं सोचा तुम्हारे बारे में, कुछ समय के लिए सही, मैंने तुम्हें अपना माना था।’’ बेला बात पूरी नहीं कर सकी-

‘‘ अब बीती बातें न दोहराओ तो ही अच्छा है, मैंने तो एक पल के लिए भी तुम्हें उस रूप में नहीं देखा, मुझे पता था कि भाई के लिए मैं झूठ का दुल्हा बना हूॅं। पर सोंचू या नहीं हुआ तो तुम्हारा बुरा ही’’----

‘तो चलूं अब किसी से मेरे आने की बात न कहना, अकेली आना! मैं आ जाऊँग।’’ वह उठकर जाने लगा।

‘‘ सुनो बूटा सिंह वल्द जागीरदार सिंह यदि तुम्हारा मन पक्का हो पुराने रिश्ते को निभाने के लिए। तभी आना, अगर तुम नहीं आये तो.....गंगा की गोद ही मेरा आश्रय होगी।’’-- बूटा ने एक बार पलट कर देखा;जैसे कह रहा हो एक बार मौका देकर तो देखो। और कमरे से बाहर हो घर के बाहर चला गया।

‘‘ दिन भर सोचने के बाद बेला ने इस दुःसाहस का निश्चय कर लिया- देखा जायेगा यदि यह कुछ गड़बड़ करेगा तो निपट लूॅंगी। इस जेल से निकलना जरूरी है। बर्ना जिस विवशता से माॅं बनी, वही बनी रह जायेगी - जब लड़का भूख बीमारी से मर जायेगा, या अनपढ़ रह जायेगा या बाप की तरह नशे का गुलाम होकर सबका जीना हराम कर देगा। या स्वयं भी औघड़ की मार खातें -खातें मर जायेगी या आॅंख दाॅंत तोड़ कर नरक भोगेगी। नहीं राम! अब यदि कोई इस पिंजरे का द्वार खोल रहा हैं तो देर किस बात की? जब रात को नशे में घुŸा औघड़ खाट पर सो गया, तब बेला ने सोते बालक को गोद में उठाया, और सर पर चादर डाल कर हाथ में झोला ले घर से निकल पड़ी। माघ की नीम अंधेरी और ठंढ़ी रात उसे रोक नहीं सकी। घर से खेत ही खेत बाग का रास्ता पकड ़कर जाने में गंगा तट 3कि.मी.था। कुछ डर, कुछ बल कर के बेला तट पर पहुॅंच गई। अभी काफी अंधेरा था गंगा का जल शांत था। पाट पर से ठंढ़ी हवा आराम से अपनी दिशा तय कर रही थी। बेला ने निगाहें उठा कर देखा जहाॅं तक नजर जाती तट और पाट दोनों सूने थे। कभी-कभी पास की कटिली झाड़ियों से सियारों के रोने की आवाज आती वातावरण और भयावह हो जाता। यदि किसी ने पहचान लिया तो, पकड़कर फिर पहुॅंचा देंगे उसी काल कोठरी में, तब तो औघड़ हमेशा ताला लगा कर ही कहीं जाया करेगा, नहीं अब वापसी नहीं होंगी बेला की! गंगा का गहरा जल उसे अपनी गोद में स्थान देगा। अरे बच्चे का क्या होगा! इतनी कठिनाइयों में जिसे बचाया उसे कैसे मार सकेगी। तो क्या गंगा नहा कर वापस चली जाय? शायद बूटा को उसकी शर्त मंजूर नहीं। आया होगा किसी स्वार्थ से ; पूरा परिवार ही राक्षसों का हैं।

’’नहीं ऐसा नहीं है, बूटा । आयेगा जरूर;।’’ बेला तर्क वितर्क करती बार-बार चारो ओर देख रही थी। ‘‘ बच्चे को यही सुलाकर बिदा होना ठीक रहेगा, कोई न कोई इसे औघड़ तक पहुचा ही देगा। फिर जो उसकी तकदीर में होगा वही होगा। बच्चे को छोड़ने की कल्पना से ही बेला का हृदय चित्कार कर उठा, ’’नहीं-नहीं, उसे मरना नहीं जीना है, अपने बच्चे के लिए, चाहे जो यत्न करना पड़े, माॅं होकर वह अपने पुत्र को यहाॅं अकेले में जानवरो का ग्रास बनने के लिए नहीं छोड़ सकती।’’- परन्तु घर भी तो.....?

‘‘ बेला ने निश्चय किया, भले ही बूटा न आये अब वह घर वापस नहीं जायेगी, इतनी बड़ी दुनीयां में उसे उसका मुकाम अवश्य मिलेगा। परन्तु जरा होशो हवाश से काम लेना जरूरी हैं। गंगा जी! अपनी इस दुःखियारी बेटी को राह दिखाओ ! सहारा दो मा ! सहारा दो! वह कातर स्वर में रो पड़ी। जैसे ही उसने आकाश की ओर नजर फेरी, गंगा जी के जल पर कोई प्रकाश सा दिखा, जल में नाव चलने जैसी आवाज आई, बेला के दिल में आशा के हजारों दीपक टिमटिमा उठे। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अपने होने का संकेत कैसे दे।

थोड़ी देर में एक बड़ी नाव घाट पर आ लगी। खेने वाले ने बड़े बांस की लग्गी टेक कर नाव धीमी की। कंबल ओढ़े कोई नीचे उतरा- चान्दनी के उजाले में बेला ने पहचाना - वह बूटा ही था। उसके साथ नाव पर मल्लाह भी था।

‘‘लाओ भाभी बच्चे को दो!’’ बूटा ने मानू को गोद में लिया और सहारा देकर नाव पर बेला को चढ़ा लिया, लग्गी हटाते ही नाव एक निश्चित दिशा को चल पड़ी। बेला ने देखा भगवान् भुवन भास्कर क्षितिज के कोने से अलसाये से कुहरे की झीनी चादर ओढ़े प्रगट हो रहे थे, उनकी सुनहरी किरणें गंगा जी के जल को होले-होले स्पर्श कर रही थी; मानो हौले-होले जगा रही हो।

------00-------

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें